BANC 133: सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान के मूल तत्व

अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य

(TMA)

कोर्स कोड: बीएएनसी 133

असाइनमेंट कोड: बीएएनसी 133/ASST /TMA /जुलाई 2026 और जनवरी 2027

कुल अंक: 100

सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सत्रीय कार्य- अ

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 500 शब्दों में उत्तर दें। 2x20=40

क. भारत में मानवविज्ञान के विकास की विवेचना कीजिए।

ख. आँकड़ों के संकलन की विधियों के रूप में क्षेत्रकार्य, सर्वेक्षण तथा प्रयोग की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य- ब

निम्नलिखित में प्रत्येक के बारे में 250 शब्दों में उत्तर दें। (संक्षिप्त नोट्स लिखें)। 3x10=30

क. समाजों में प्रचलित विवाह के विभिन्न प्रकारों की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए तथा उनकी विवेचना कीजिए।

ख. संघर्ष सिद्धांतों पर एक टिप्पणी लिखिए।

ग. आर्थिक संस्थाओं के घटकों के रूप में उपभोग, उत्पादन तथा विनिमय का परीक्षण कीजिए।

सत्रीय कार्य- स

निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक के उत्तर 150 शब्दों में दीजिए। 6 x5=30

क. वंशानुक्रम समूह आधारित समाज

ख. साहित्य समीक्षा

ग. परिवार

घ. ऐतिहासिक विशिष्टतावाद

ङ. अवलोकन

च. प्रमुख प्रतीक

क. भारत में मानवविज्ञान के विकास की विवेचना कीजिए।

उत्तर

भारत में मानवविज्ञान का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया है। मानवविज्ञान मनुष्य के जैविक विकास, संस्कृति, सामाजिक संस्थाओं, भाषाओं तथा जीवन-पद्धतियों का समग्र अध्ययन करता है। भारत की विशाल भाषायी, धार्मिक, क्षेत्रीय और जनजातीय विविधता ने इस विषय को अध्ययन की समृद्ध सामग्री दी। फिर भी आधुनिक, व्यवस्थित मानवविज्ञान का उदय मुख्यतः औपनिवेशिक काल में हुआ और स्वतंत्रता के बाद इसका दृष्टिकोण तथा शोध-विषय काफी बदले।

प्रारंभिक ज्ञान और यात्रियों के विवरण

भारत में मानव-समाज संबंधी जिज्ञासा बहुत पुरानी है। वैदिक साहित्य, धर्मशास्त्र, बौद्ध-जैन ग्रंथ और ऐतिहासिक आख्यानों में परिवार, विवाह, सामाजिक श्रेणियों, रीति-रिवाजों तथा विभिन्न समुदायों के उल्लेख मिलते हैं। ये विवरण आज की वैज्ञानिक नृवंशविज्ञान पद्धति पर आधारित नहीं थे, पर सामाजिक जीवन के अध्ययन की पृष्ठभूमि अवश्य तैयार करते हैं। मेगस्थनीज, अल-बिरूनी और ह्वेनसांग जैसे यात्रियों ने भारतीय समाज, धार्मिक परंपराओं और स्थानीय व्यवहारों का वर्णन किया। उनके लेखन से यह समझ बनती है कि समाज को बाहर से देखने वाले व्यक्ति की स्थिति उसके निष्कर्षों को प्रभावित कर सकती है।

औपनिवेशिक काल और वर्णनात्मक अध्ययन

ब्रिटिश प्रशासन को भूमि, जनसंख्या, जातियों, भाषाओं और स्थानीय समूहों की जानकारी चाहिए थी। इसलिए जनगणना, जिलावार गजेटियर, जाति-जनजाति संबंधी पुस्तकों तथा प्रशासनिक रिपोर्टों के रूप में बड़ा विवरणात्मक साहित्य तैयार हुआ। एच. एच. रिस्ले जैसे अधिकारियों ने जाति के वर्गीकरण में शारीरिक मापों और नस्ली अवधारणाओं का प्रयोग किया। आज इनके कई निष्कर्ष वैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टि से अस्वीकार्य माने जाते हैं। इन सर्वेक्षणों का एक लाभ समुदायों के बारे में जानकारी का संकलन था, लेकिन वे अक्सर सत्ता की जरूरतों, यूरोपीय पूर्वधारणाओं और स्थिर श्रेणियों से प्रभावित थे। इसलिए औपनिवेशिक अभिलेखों को स्रोत मानते समय आलोचनात्मक दृष्टि आवश्यक है।